अन्नपूर्णा योजना
7 जन्मदिन | वैवाहिक वर्षगाँठ | पूर्वज-वार्षिकी
प्रकाशन तिथि : 09 जुलाई, 2025
Posted at N.I. Estate P.O. N.D.-28
From 11-07-2025 to 15-07-2025
The Registrar of News Papers for India
R.N.I. DELHIN-2001-3044 Regd.
News Paper "Registered"
- DL(W) 10/2034/2023-25
- U(W)-37/2023-25
Licenced to post without prepayment

धर्मदूत

'धर्म एवं सामाजिक जागृति का अनुपम मासिक पत्र'

सावन शिवरात्रि
23 जुलाई की
हार्दिक शुभकामनाएं

प्रतिष्ठा में,

प्रेषक : विश्व जागृति मिशन, ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लाक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015

जुलाई, 2025 | श्रावण | सं. 2082 | अंक 288 | मूल्य एक प्रति 5.00 रु. | वार्षिक 50.00 रु. | पृष्ठ 8

1 अध्यात्म | 2 सम्पादकीय | 3 अम्बर की पाती | 4 समाचार दर्शन | 5 गुरु घर से पाती | 6 धर्मादा | 7 समाचार दर्शन | 8 पर्व त्योहार

जीवन में कोई भी बहाना मिले गुनगुनाने का, घूमने का, तो हाथ से जाने नहीं देना। ताली बजाकर गाएं, मस्त हो जाएं ताकि आपका गम दूर हो जाए। चुनौतियों से जूझने की कोशिश करें, भागने की नहीं। कर्त्तव्यनिष्ठ बने। संतुलन बनाकर चलो। जो सन्तुलन खो बैठा वह फेल हो जाता है। भगवान कृष्ण युद्ध से लौटकर आते हैं, तो कहते हैं, ''अर्जुन! घोड़ों को खोल दो। कुछ देर शांत होकर उस परमात्मा से अपने को जोड़ो। कुछ भी स्थिति हो भगवान का ध्यान जरूर करना।'' ●

आइये! चलें वृन्दावन जो भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का साक्षी पवित्र तीर्थ है। वृन्दावन वही स्थान है, जहां भगवान श्रीकृष्ण ने रास रचाया, माखन चुराया, ग्वालबालों के साथ गऊओं को चराया। साक्षात् नारायण होकर भी नर रूप में नटखट लीलाएं की। यहां कण-कण में कृष्ण हैं और हर क्षण उनके वंशी की मधुर तान सुनाई देती है। जगद्गुरु भगवान श्रीकृष्ण की क्रीड़ास्थली वृन्दावन में सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के सान्निध्य में परमात्मा श्रीकृष्ण को पाने और हृदय में बसाने का 'श्रीकृष्ण ध्यान योग' स्वर्णिम अवसर है।

जीवन की चुनौतियों में मुस्कराते रहे श्रीकृष्ण

भारत भर में बच्चों के लिए एक शब्द प्रचलित है कि आपके बाल-गोपाल कैसे हैं? हिन्दुस्तान में बालक कृष्ण का एक रूप है। बालकृष्ण हमारे आंगन में, सबके आंगन में किलकारियां भरके, खेलें, यह हमारे पुण्यमय भारत देश की संस्कृति है। भगवान कृष्ण लीला पुरुषोत्तम हैं। उन्होंने बाल जीवन से अलौकिक लीलाएं शुरू कर दीं।

भगवान कृष्ण का बाल जीवन चुनौतियों से भरा हुआ है। उनके जन्म के साथ ही मौत की छाया सामने आकर खड़ी हो गई। जिस मां से जन्म लिया वहां से चल कर यशोदा मां के पास जाना पड़ा। भगवान कृष्ण ने देवकी से कहा ''मैं तुम्हारी जमीन पर उगा हूं मगर महकूंगा कहीं और, तेरा भी नाम चलेगा, मगर यशोदा मां को पालने का मौका मिला। कृष्ण का नटखट रूप चुनौतियों से भरा जीवन लिए हुए है। पूतना कंस आदि सब मृत्यु का रूप लेकर सामने आ रहे हैं, मगर कृष्ण सबको देखते हैं। उन्होंने कभी शिकायत करना नहीं सीखा। सदा हंसते हुए ही चलते रहे।

भगवान कृष्ण का शैशवकाल विपदाओं, के बीच चल रहा है। गऊओं के बीच वन में चल रहे हैं, हाथ में बांसुरी। सुदर्शन चक्र भी भगवान के हाथ में रहा। मगर भारत में ज्यादा बांसुरी वाले रूप को ही पूजा गया। इन्सान का जीवन भी बांसुरी जैसा है। बांसुरी देखने में तो कुछ नहीं मगर बांसुरी से ऐसा राग निकलता है कि जिसकी किसी भी वाद्ययंत्र से तुलना नहीं की जा सकती। भगवान श्री कृष्ण को सम्पूर्ण जगत् का गुरु माना जाता है। अगर सद्गुरु का सान्निध्य मिल जाए और संस्कार मिल जाए तो बांसुरी जैसा रूप सबका हो सकता है, जिसकी कोई तुलना नहीं।

भगवान कृष्ण के माथे पर मोरपंख भी बहुत सुन्दर सजा हुआ है। मोर नृत्य का प्रतीक है, उत्सव का प्रतीक है। बादल देखकर मोर नाचने लगता है। भगवान कृष्ण को एक ही रूप पसन्द है, नाचो, गाओ, गुनगुनाओ। इसे जीवन का अंग बना लो। ''जो आदमी गुनगुनाता रहता है, हंसता रहता है, वह धार्मिक है, सन्त है। ''फूल दुनिया में सबको इसलिए अच्छा लगता है क्योंकि उसे कांटो में भी मुस्कुराना आता है। ऐसे ही जीवन में कितनी भी कठिनाईयां हों, उनमें हंसना-मुस्कुराना सीखो, भगवान कृष्ण ने यही संदेश दुनिया को दिया। जिएं सदैव मुस्कुराते हुए।

भगवान कृष्ण के स्वरूप में एक बात और आती है कि उन्होंने कभी शिकायत नहीं की। अपने आपको स्वयं अपनी जिंदगी का जिम्मेदार मानो। हर व्यक्ति के अन्दर इतनी शक्ति है कि वह आगे बढ़ सके। ज्यादा आगे बढ़ने के चक्कर में तनाव न पैदा कर लें। आगे बढ़ने की भावना जरूर पैदा करो। हर स्थिति में मुस्कराते हुए काम करो। काम को बोझ मत समझो।

चलो भगवान श्रीकृष्ण की लीलाभूमि वृन्दावन
ध्यान साधना शिविर
में भाग लेने का सुनहरा अवसर
आइये, जहां बाल कृष्ण का बचपन बीता वहां ध्यान की यात्रा करें
परम पूज्य सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी के दिव्य ज्ञान द्वारा निर्देशित
श्रीकृष्ण ध्यान योग
12 से 16 नवंबर 2025
श्री कृष्ण की नगरी में विशेष कार्यक्रम:
• पूज्यश्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी के पावन मार्गदर्शन में ध्यान
• नवीन ध्यान शैलियों से परिचय
• वृन्दावन और आसपास के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण जो अपनी सुंदरता और आध्यात्मिक महत्व के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं।
• सुखद आवास एवं सात्विक भोजन की व्यवस्था
ध्यान स्थली:
भारती उपवन, वैजंती धाम
जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य द्वार के पास, छटीकरा रोड, वृन्दावन, उत्तर प्रदेश, 281121
शीघ्र अपना स्थान सुरक्षित करें!
वृन्दावन और आसपास के दर्शनीय स्थल (ध्यान स्थली से उनकी दूरी)
सीमित आवास व्यवस्था
श्री बांके बिहारी मंदिर 8.6 KM
प्रेम मंदिर 3.9 KM
इस्कॉन मंदिर (कृष्ण बलराम मंदिर) 4.4 KM
माँ वैष्णो देवी धाम 1.2 KM
कालिया दह घाट 5.8 KM
वृंदावन चंद्रोदय मंदिर 2.1 KM
मथुरा 12.6 KM
गोकुल 23.6 KM
निधिवन 8.1 KM
गोवर्धन पर्वत 17.7 KM
बरसाना 39.9 KM
नंदगांव 45.4 KM
नोटः- रमणीक स्थलों पर भ्रमण करने की व्यवस्था साधकों को स्वयं करनी होगी।
आयोजक: विश्व जागृति मिशन
पंजीकरण व अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
(+91) 9589938938, 9685938938, 8826891955, 9312284390

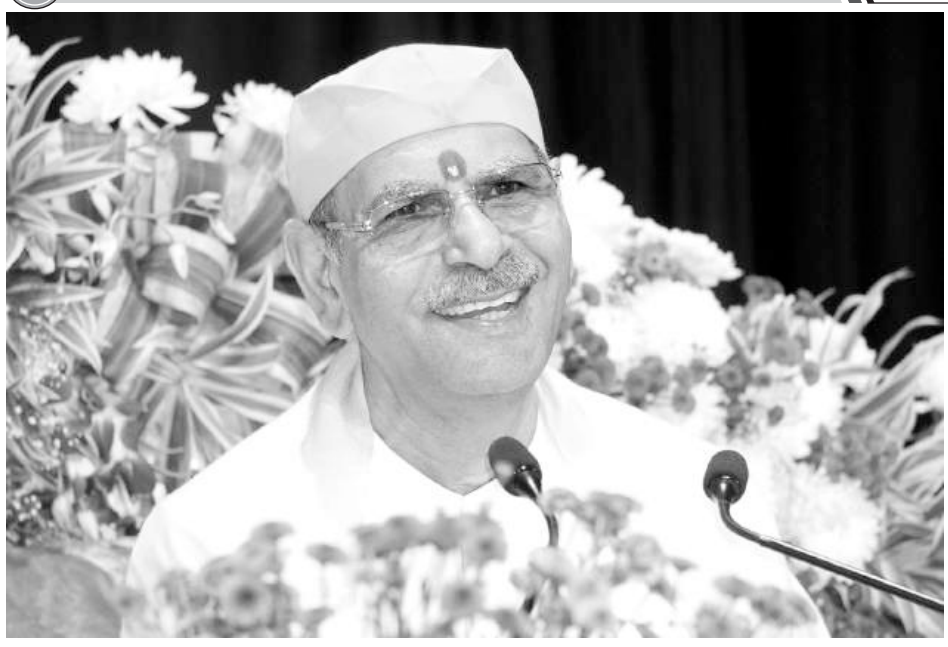

मन को कैसे बनायें सुमन

मन बहुत चंचल है। उसका मानव शरीर में कोई स्थूल आकार नहीं है किन्तु केवल विचारों का प्रवाह होते हुए भी बहुत शक्तिशाली है। बहुत नचाता है इन्सान को, बुरी तरह भगाता है, दौड़ाता है और उलझाता है व्यक्ति को। मन को जबरदस्ती बांधा नहीं जा सकता, किन्तु साधना से साधा जा सकता है। बस इसकी गति की दिशा बदलनी सीख जाइये, तो आपका मन सुमन बन जायेगा। मन मनुष्य का शत्रु भी है और मित्र भी। बस इसे मित्र बना लीजिए।

मन को साध कर सही दिशा में ले जाने के लिए कुछ सूत्रों का पालन करें जैसे सद्चिन्तन करना, अन्तर्मुखी होना, मानव जीवन के उद्देश्य को जानना व पहचानना, संगति का ध्यान रखना, सात्विक आहार ग्रहण करना और बहिर्मुखी प्रवृति का त्याग करना। सद्चिन्तन का अर्थ है भगवान के किसी स्वरूप में मन लगाना अथवा किसी महान संत के जीवन पर ध्यान केन्द्रित करना। विश्व जागृति मिशन से जुड़े हम शिष्यों के लिए सद्गुरुदेव जी महाराज जैसे आदर्श संत से अन्य और कौन हो सकते हैं, जिनके ईश्वरीय शिव स्वरूप का ध्यान करके हम अपने जीवन को धन्य कर सकते हैं।

अन्तर्मुखी होने के लिए सांसारिक वस्तुओं की ओर खुद को आकर्षित न करें। भावनाओं को ध्यान साधना के द्वारा नियंत्रित करें। भगवान के दिव्य गुणों का ध्यान करें। संतों के जीवन का अध्ययन करें, उनके विचारों का चिन्तन करके उनको अपने आचरण में उतारें। अपने जीवन के उद्देश्य का निरीक्षण-परीक्षण करें। क्रोध वास्तव में अतृप्त कामनाओं की ही बाह्य अभिव्यक्ति है। वासनाओं-कामनाओं से दूर रहें। संगति का विशेष ध्यान रखें। ऐसे लोगों का संग न करें, जिनकी बुरी आदतें हों, जिनकी सोच नकारात्मक हो। अपना आहार सात्विक, पौष्टिक, सादा और हल्का शाकाहारी रखें। तीखा, मसालेदार व उष्ण प्रकृति के भोजन से बचें। बहिर्मुखी प्रवृति का त्याग करें। कर्मयोग के भाव का विकास करें। अपने कार्यों में रुचि लें और स्वयं करें। नि:स्वार्थ भाव से सेवा करें। दूसरों के कल्याण के लिए सेवा करके सन्तुष्ट अनुभव करें। अपने हृदय को निर्मल व पवित्र रखकर सेवा करें और वह भी इस भाव से कि मुझे इसके बदले में कुछ नहीं चाहिए। अगर आप अपने जीवन में इन सूत्रों का पालन करते हैं तो आपका मन आपका मित्र बनकर आपकी आज्ञा के अनुसार चलेगा।

-डॉ. नरेन्द्र मदान

सद्गुरुदेव उवाच

भगवान में दृढ़ भरोसा रखने से मिलती है खुशहाल जिंदगी

जिन्दगी में हर इंसान किसी न किसी बात की चिंता से परेशान है और चिंता उसे दीमक की तरह चाट रही है लेकिन जो चिंता मुक्त होकर अपनी मस्ती में मस्त होकर अपने कर्तव्यों को करता है वही जीवन में सफल है, असल में जीना इसी का नाम है। देखा जाए तो जब तक जिन्दगी है तब तक कोई न काई समस्या चलती ही रहती है क्योंकि जिंदगी का रास्ता ऊंचा-नीचा है। यहां अनुकूलता भी मिलेगी और प्रतिकूलता का भी सामना करना पड़ेगा। यहां वर्ष भर के समय में सर्दी-गर्मी, बरसात-वसंत सभी आएंगे। इसलिए हर तरह के मौसम को स्वीकार करना सीखें, सहन करें। जो हर मौसम को स्वीकार करके आनन्द लेने लग जाता है तो समझिए उस आदमी को जिन्दगी जीनी आ गई चाहे उसकी उम्र कितनी भी हो जाए वह वृद्ध ही क्यों न हो लेकिन आप यह मानना कि वो जवान है। इसके विपरीत जो चिन्ताग्रस्त रहते हैं वो जवानी में ही बूढ़े हो जाते हैं। इसलिए चिन्तामुक्त होकर फकीरी वाला जीवन जीने की सलाह दी गई है। फकीरी से मतलब है मस्त होकर परमात्मा के नाम से जुड़ जाना, हर हाल में भगवान का धन्यवाद करना। एक सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार जो लोग भगवान को नहीं मानते वह दु:ख आने पर जल्दी निराश, डिप्रेशन फोबिया या किसी और तरह की मानसिक समस्या से ग्रस्त हो जाते हैं। लेकिन जिन लोगों को परमात्मा में विश्वास होता है वे दु:ख में प्रभु का नाम जपने लग जाएंगे, उनको विश्वास होता है कि इंसान काम आए न आए प्रभु काम आएंगे, वही ठीक करेंगे। उनकी सोच यही होती है कि जो अब तक निभाया है आगे भी निभाएगा अब तक दिया है आगे भी देगा। जीवन में उतार-चढ़ाव तो आएंगे, अगर दु:ख के साथ निराशा आ गई तो दु:ख कभी जाएगा नहीं और अगर दु:ख के साथ उम्मीद और आशा बनी रही तो दु:ख देर तक ठहरेगा नहीं। ●

सत्संग से बदलती है जीवन की दशा

अच्छे लोगों की संगति ही सत्संग है। सत्संग जीवन को बेहतर बनाने, ज्ञान प्राप्त करने, मन को शुद्ध करने और आध्यात्मिक विकास में सहायक होता है। सत्संग में सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है और जीवन की नकारात्मकता मिटती है। यह एक ऐसा माध्यम है जहां बिखरा हुआ मन ज्ञान, ध्यान और सत्संगति से एकाग्र होकर चेतनात्मक ऊर्जा को प्राप्त करता है। गोस्वामी तुलसी दास जी ने रामचरित मानस में कहा है-**तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिय तुला एक अंग। तूल न ताहि सकल मिली जो सुख लव सत्संग।।** अर्थात् स्वर्ग और मुक्ति के सुख को तराजू के एक पलड़े पर रखा जाय और दूसरे पलड़े पर क्षणमात्र का सत्संग तो सत्संग का ही पलड़ा भारी पड़ेगा। ●

परमपूज्य श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित

भक्ति सत्संग के आगामी कार्यक्रम, 2025

17 से 20 जुलाई	- बैंगलुरु, कर्नाटक
04 अगस्त	- युवा अभ्युदय, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
09 अगस्त	- पूर्णिमा दर्शन एवं रक्षा बंधन ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, नई दिल्ली
07 सितम्बर	- पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
02 अक्टूबर	- श्रद्धापर्व, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
04 से 07 अक्टूबर	- श्री गणेश लक्ष्मी महायज्ञ, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
07 अक्टूबर	- शरद पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
12 से 16 नवम्बर	- श्रीकृष्ण ध्यान-योग, वृन्दावन, उत्तर प्रदेश

आयोजक : विश्व जागृति मिशन

प्रिय आत्मन्!

व्यक्ति पूरी जिन्दगी शांति की तलाश में अशांत रहता है और खुशी की तलाश में दुखी रहता है। खुशी व्यक्ति के अन्दर छिपी है, बाहर नहीं। अन्दर खुशी नहीं है तो हंसने के सौ बहाने होते हुए भी व्यक्ति हंस नहीं पाता और अगर वह अन्दर से खुश है तो हर स्थिति-परिस्थिति में उसके चेहरे पर मुस्कराहट का फूल खिला रहता है। अन्दर की खुशी आती है शांति और संतुष्टि से, इसलिए हर स्थिति में शांत-संतुष्ट रहना सीखें। कुछ लोगों की आदत होती है कि खुशी के समय में भी अपने बीते दिनों के दुख के गीत गाने लगते हैं, जबकि उन्हें यह पता होना चाहिए कि दुख का रोना रोते रहने से दुख और बढ़ता है, इसलिए हर समय दुख का रोना न रोएं, दुख को थपकियां न दें, लोरियां न सुनाएं। दुख को भूलकर अपनी शक्तियां पहचानें और आगे बढ़ें। अन्दर की खुशी, अमीरी और सम्पन्नता के लिए उस शक्ति से जुड़ें जिससे जुड़ने के बाद झोंपड़ी में रहकर भी राजमहल जैसा आनन्द आता है। वह शक्ति है परम पिता परमात्मा, वह सबसे जुड़ा है, वह सबके साथ है, उससे नजदीकी बढ़ाएं, उसकी निकटता पाने के लिए गुरु की शरण में जाएं, गुरु आपको मंत्र विधि देंगे। मंत्र जप में दृढ़ विश्वास से आपके हर कार्य सिद्ध होंगे और आपके मन और जीवन में हमेशा प्रेम, प्रसन्नता का वास हो जायेगा। भगवान करे आप सभी के जीवन में शांति-संतुष्टि आए और प्रेम प्रसन्नता से जीवन प्रफुल्लित हो जाए।

बहुत-बहुत आशीर्वाद, शुभ मंगल कामनाएं।

-आचार्य सुधांशु

एक बार दान, अनंतकाल तक पुण्य का वरदान

धर्मकोष एक ऐसा कोष है जिसमें दानदाता एक बार में एक निश्चित धनराशि संस्था द्वारा चलाई गई विभिन्न सेवाओं के लिये दान करेगा, वह राशि दानदाता अपनी सुविधानुसार चार किश्तों में भी दे सकता है। दानदाता से प्राप्त सहयोग राशि को बैंक में स्थाई रूप से जमा कर दिया जायेगा और उस राशि से प्राप्त ब्याज या अन्य माध्यमों से प्राप्त आय द्वारा विश्व जागृति मिशन की विभिन्न सेवाएं निरन्तर संचालित रहेंगी। धर्मकोष में दी गई यह धन राशि ठीक वैसे ही है जैसे एक बार आम का पेड़ लगाओ और जिन्दगी भर उसके फल खाओ। अर्थात् धर्मकोष में एक बार दान दो और उस दान की अर्जित राशि से वर्षों-वर्षों तक दान देने का पुण्य लाभ पाओ।

धर्मकोष दानदाताओं के लिए आनन्दधाम में होता है

नित्य यज्ञ, पूजा, प्रार्थना एवं आरती

मिशन द्वारा संचालित सेवाकार्यों और भक्तों के अनन्तकाल तक पुण्य प्राप्ति के लिए एक "**धर्मकोष**" बनाया गया है। इस धर्मकोष में दान देने वाले भक्त के नाम के साथ उसकी वंशावली का नाम एक कालपात्र में स्वर्णाक्षरों में अंकित कर उसे द्वादश ज्योतिर्लिंग प्रांगण में स्थापित किया गया, जो कि सैकड़ों वर्षों तक सुरक्षित रहेगा और दानदाता के आनेवाली पीढ़ियां अपने पूर्वजों पर गर्व करेंगी। धर्मकोष के दान-दाताओं की वंशावली शिव वरदान तीर्थ में स्थापित हैं, जहां पर नित्य सायंकालीन यज्ञ, आरती में गुरुकुल के ऋषिकुमारों द्वारा धर्मकोष के दानदाताओं के लिए यज्ञ में आहुतियां दी जाती हैं तथा उनके लिए प्रार्थना व मंगलकामना भी की जाती है।।

धर्मकोष में आप यह सहयोग सीधे बैंक एकाउण्ट में भी जमा कर सकते हैं। जमा करने के उपरान्त श्री ललित कुमार जी को फोन नम्बर - 9312284390 पर अवश्य सूचित करें ताकि दिये गये दान की रसीद आपको भेज सकें।

Name of Account : VISHWA JAGRITI MISSION
Account number : 235401001600
IFSC : ICIC0002354
Name of Bank : ICICI Bank
Address of Branch : Shop Number 3, Nazafgarh Road,
Nangloi, New Delhi - 110041

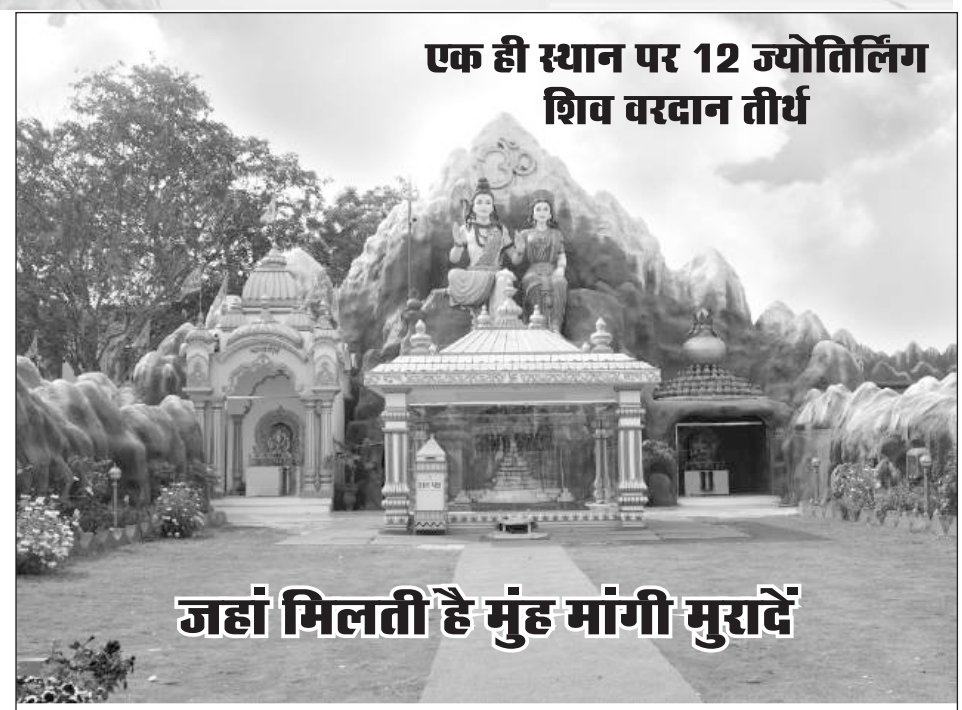

एक ही स्थान पर 12 ज्योतिर्लिंग शिव वरदान तीर्थ

जहां मिलती है मुंह मांगी मुरादें

शिव वरदान तीर्थ में देश के प्रमुख तीर्थों में स्थित 12 ज्योतिर्लिंगों के वास्तविक स्वरूप को पर्वत माला की गुफा में शास्त्रोक्त विधि से अभिमंत्रित कर क्रमशः स्थापित किया गया है। निरंतर पूजा-पाठ, मंत्र-जाप से ये ज्योतिर्लिंग महा वरदानी बन चुके हैं। जिन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन के लिए भक्त जन दक्षिण में रामेश्वरम से लेकर उत्तर में हिमालय के केदारनाथ और पूर्व में वैद्यनाथ से लेकर पश्चिम में सोमनाथ जाते हैं। अब उन्हें अन्य स्थानों पर जाने की जरूरत नहीं है वे 12 ज्योतिर्लिंगों के शिव वरदान तीर्थ में एक साथ ही दर्शन-पूजन कर देश के 12 प्रमुख ज्योतिर्लिंगों के दर्शन का पुण्यफल प्राप्त कर सकते हैं।

शिव वरदान तीर्थ पर्वत श्रृंखला के मध्य भाग में माँ लक्ष्मी और गणेश भगवान की कृपा का पवित्र धातु से निर्मित स्वर्णिम आभा लिए 810 किलो का एक पूजित श्रीयंत्र स्थापित है। जिसके सामने बैठकर प्रार्थना करने से ब्रह्माण्ड की दिव्य ऊर्जा भक्त के दुख-दुर्भाग्य को दूर कर सुख-सौभाग्य का वरदान देती है। इसी तीर्थ में भगवान तिरुपति बालाजी, कुबेर जी, गरुड़ जी, माँ पार्वती एवं कार्तिकेय जी की स्थापना की गई है। यहां दर्शन पूजन के लिए देश-विदेश से भक्त जन आते हैं। यह ऐसा स्थल है जहां भक्तों की मुंह मांगी मुरादें पूरी होती हैं।

सद्गुरु की प्रेरणा से मिलती है जीने की कला

जीवन में गुरु की प्रेरणा बहुत काम आती है। सद्गुरु प्रेरणा बनकर हर दिन हम साधकों को जगाते हैं। जो आपको जगा दे, आपको आपका ही स्वरूप दिखा दे, आपके अंदर चिंता, निराशा और अकर्मण्यता की राख में छिपी हुई आशा- उत्साह और कर्मठता की अग्नि को जो प्रकट कर दे वह है आपका सद्गुरु। आपके अंदर की आग यदि जागृत है तो शेर भी आपको ललकार नहीं सकता और यदि अंदर के उत्साह में राख जम गई तो चीटिंयां भी रौंदती हुई आगे निकल जायेंगी। इसलिए गुरु से प्रेरित होते रहो, अपने अंदर की आग को ठंडा मत होने दो, हमेशा कुछ न कुछ सीखते रहो और जीवन में अच्छी सीख, जीवन की जागृति सद्गुरु से ही मिलती है।

कहा जाता है कि भगवान ने इंसान को जीवन तो दे दिया, किन्तु जीने की कला नहीं दी, जीने की कला तो सद्गुरु से ही मिलती है। जीवन में ऊपर उठने, उन्नति करने की कला तो सद्गुरु की प्रेरणा से ही आती है। स्वयं को प्रकाशित करने के लिए जो आलोक चाहिये जो विधि-विधान चाहिये वह हमें गुरु से ही मिलता है।

गुरु से गुरुमंत्र पाकर उसे नियम से जपो, गुरु की शिक्षाओं को जीवन में उतारो, आचरण में लाओ। सेवा का कोई न कोई कार्य जरूर करो, सेवा भगवान की सबसे बड़ी पूजा है। ऐसे अवसर ढूंढ़ो जहां बड़े सेवाकार्य चल रहे हों उनमें भागीदारी कर अपने धन और जीवन को धन्य करो। ●

शिवधाम आश्रम पंचकुला में देशव्यापी गुरुपूर्णिमा महोत्सव पर दो दिवसीय सत्संग

जीवन में नियम, अनुशासन और व्यवस्था की सीख देता है सद्गुरु - सुधांशु जी महाराज

पंचकुला। देशव्यापी गुरुपूर्णिमा महोत्सव कार्यक्रम की श्रंखला में पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सान्निध्य में 7 एवं 8 जून, 2025 को शिवधाम आश्रम, पंचकुला में दो दिवसीय सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पंजाब और हरियाणा से बड़ी संख्या में कार्यक्रम में आए भक्तों को आशीर्वाद देते हुए गुरुवर सुधांशु जी महाराज ने कहा कि दीपावली का पर्व आने से एक महीना पूर्व

जिस तरह घर की आंतरिक एवं बाह्य साफ-सफाई करते हैं। उसी तरह गुरु पूर्णिमा महोत्सव पर भी एक महीना पूर्व गुरुदेव के दर्शन-पूजन के लिए स्वयं को तैयार करना चाहिए।

सद्गुरु ही शिष्य के जीवन में नियम, अनुशासन और व्यवस्था की सीख देता है। उन्होंने कहा कि कहा कि भाग्य निर्माण के लिए सेवा ही सबसे बड़ा तप है। अपनी किस्मत को चमकाने के लिए गुरु के मार्गदर्शन में हर कार्य श्रद्धापूर्वक करें। गुरु कृपा से आपके हर कार्य सफल होंगे और जीवन और घर-परिवार में खुशहाली आयेगी। कार्यक्रम का समापन गुरु पूजन एवं गुरु महाआरती के साथ हुआ। मंडल के प्रधान सौरभ गुप्ता जी के नेतृत्व में कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का सराहनीय योगदान रहा। ●

रायपुर (छत्तीसगढ़) के ब्रह्मलोक आश्रम में श्रद्धालुओं ने किया गुरु पूजन

गुरु का सान्निध्य मिलना शिष्य का परम सौभाग्य - सुधांशु जी महाराज

रायपुर। राष्ट्रव्यापी गुरु पूर्णिमा महोत्सव पर विश्व जागृति मिशन द्वारा छत्तीसगढ़ रायपुर के परसदा कुम्हारी स्थित ब्रह्मलोक आश्रम में 15 जून, 2025 को पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सान्निध्य में गुरुपूर्णिमा सत्संग आयोजित किया गया।

पूज्य महाराज श्री ने कहा कि गुरु हमारे जीवन को सुधार सकते हैं। लेकिन गुरु का सान्निध्य भी आसानी से नहीं मिलता, क्योंकि आसानी से मिली चीज आसानी से चली भी जाती है। महाराजश्री ने जीवन को सुधारने के लिए तीन बातों का जिक्र किया, जिसमें स्वयं को सुधारने के साथ अपने सेहत का ख्याल रखने और घर में शांति का वातावरण रखने की बात कही। हमें स्वयं को सुधारना है, दूसरों को नहीं। हम स्वयं सुधर जाएंगे तो दूसरे किसी को सुधारने की जरूरत नहीं पड़ेगी। सुखी जीवन जीने के लिए कुछ भूलना है, कुछ याद करना है। उन्होंने गुरु मंत्र की महिमा बताते हुए कहा कि गुरु मंत्र का जाप घर पर ही कीजिये, इसके लिए कहीं भटकने की जरूरत नहीं

है। प्रवचन के बाद गुरु दर्शन के लिए शिष्यों ने कतारबद्ध होकर पादुका दर्शन कर पुष्प अर्पित किया, गुरु की आरती की। महाराजश्री ने ब्रह्मलोक आश्रम में निर्माणाधीन बहुमंजिला कैलाश मानसरोवर के कार्य का अवलोकन भी किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में रायपुर मण्डल के प्रधान के नेतृत्व में सभी अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का सराहनीय योगदान रहा। ●

लखनऊवासियों को मिला गुरु सान्निध्य, योग दिवस पर गुरुवर ने दी देशवासियों को शुभकामनाएं

गुरु की शिक्षाओं को अपनाने से आता है जीवन में बसंत-सुधांशु जी महाराज

21 जून। राष्ट्रव्यापी गुरुपूर्णिमा महोत्सव कार्यक्रम में 21 जून, 2025 को उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के हजारों गुरु भक्तों के लिए गुरुदर्शन का खास अवसर प्राप्त हुआ है। मंच आगमन के उपरान्त गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज का स्वागत एवं अभिनन्दन उत्तर प्रदेश सरकार के उप मुख्यमंत्री श्री ब्रजेश पाठक, श्री अशोक अग्रवाल, विधायक एवं नानक चंद लखनानी, पूर्व मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार ने किया। इस अवसर पर लखनऊ के रविंद्रालय सभागार में उपस्थित भक्तों को सम्बोधित करते हुए पूज्य महाराजश्री ने कहा कि गुरुपूर्णिमा आन्तरिक नवीनीकरण का शुभ अवसर है। सभी के जीवन में बसंत का आगमन हो लेकिन साथ-साथ रूपांतरण और नयापन लाने के लिए गुरुपूर्णिमा महापर्व में अपने गुरु के सम्मुख जाकर खुद को सकारात्मक ऊर्जा से साकार करें। प्रकृति में तो है बसंत है लेकिन जीवन में नहीं है। जीवन में बसंत कैसे आए इस पर विचार करके परिवर्तन करें। जीवन में परिवर्तन लाएं। बदलते दौर के जीवन में व्यक्ति अन्दर की शान्ति और प्रसन्नता के लिए आन्तरिक आवाज को सुनकर प्रसन्न रहने की कोशिश करें। व्यक्ति को निराशा और दबाव नीचे गिराने में अहम भूमिका निभाती है। खुद की शक्ति को खुद ही अर्जित करके निराशा से ऊपर उठें और अपने सद्गुरु के सम्मुख जाकर रूपांतरित करने की कला को जानें।

इस सत्संग के अवसर पर पूज्य महाराजश्री ने 11वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर देशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए योग को अपने जीवन में उतारने को कहा। गुरुआरती के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। ●

सिद्धि धाम आश्रम कानपुर में सम्पन्न हुआ एक दिवसीय गुरुपूर्णिमा महोत्सव

गुरुमंत्र जाप से जीवन में सकारात्मकता लाएं - सुधांशु जी महाराज

कानपुर, 22 जून। विश्व जागृति मिशन कानपुर मंडल द्वारा उत्तर प्रदेश के कानपुर में स्थित सिद्धि धाम आश्रम में 22 जून, 2025 को राष्ट्रव्यापी गुरुपूर्णिमा महोत्सव के मंगलमय अवसर पर व्यास मंच आगमन पर सदगुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज का स्वागत एवं अभिनन्दन गुरु भक्तों ने किया। इस मौके पर साधकों ने अपने बीच गुरुदेव को पाकर अति प्रसन्न दिखे।

भक्तों को सम्बोधित करते हुए गुरुदेव ने कहा कि अपने जीवन को ऐसा बनाएं कि आपके हाथों से इस ऋषि राष्ट्र एवं सनातन संस्कृति का भला हो सके, जिससे आपकी आने वाली पीढ़ी आपको याद करे और परमात्मा तथा सद्गुरुदेव की कृपा अनवरत बरसती रहे। महाराजश्री ने आगे कहा कि आज एक संकल्प लेने का दिवस है। आध्यात्मिक उन्नति एवं भौतिक जगत में परिवर्तन का पावन अवसर प्राप्त हुआ है। अपने पूर्व गलतियों के लिए गुरुदेव एवं पितरों से क्षमा मांगते हुए नया जीवन के लिए संकल्प तथा आदत को बदलने का

निश्चय करें। अनुशासन से ही जीवन में कृपा आती है। अपने गुरु की शरण में रहकर धन, धान्य एवं सुख समृद्धि की कामना करें और जीवन को नया होते हुए देखें। सच्चे सेवक बनकर नाम जपने वाले बनें। अपने जीवन में दूसरों की मदद करने वाले बनें और परमात्मा की कृपा प्राप्त करें। नया रूप धारण करके खुद को बदलें। मन ही मन गुरु मंत्र जपते हुए खुद को सकारात्मक बनाएं। ●

राम और कृष्ण का समन्वित रूप हैं मेरे सद्गुरु

एक भरोसो एक बल एक आस-विश्वास। एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास।। (रामचरित मानस)

संत तुलसीदास जी कहते हैं कि मेरा एक पर ही भरोसा है, एक ही बल है और सिर्फ एक से ही आशा और विश्वास है। वह हैं मेरे प्रभु श्री राम, जिन राम और घनश्याम के लिए मेरा मन उसी तरह से प्यासा है, जैसे चातक स्वाति नक्षत्र की बूंद का ही पान करता है।

देव भूमि भारत में भगवान के दो अवतार राम और कृष्ण हर किसी के मन और जीवन में बसे हैं। भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है, जो धर्म, मर्यादा और आदर्शों के प्रतीक हैं। कृष्ण को लीला पुरुषोत्तम कहा जाता है, जो प्रेम, ज्ञान और कर्म के प्रतीक हैं। भगवान राम का जीवन एक आदर्श पुत्र, भाई, पति और धर्म परायण प्रजापालक राजा के रूप में प्राप्त होता है तो भगवान श्रीकृष्ण का जीवन एक आदर्श योद्धा राजनीतिज्ञ, दार्शनिक गुरु और प्रेम का प्रतीक है। जहां राम जी की 12 कलाएं और 2 अन्य कलाएं सूर्य की भांति प्रकाशमान हैं जो मानव जीवन को सही दिशा दिखाती हैं वहीं कृष्ण की 16 कलाएं चंद्रमा की भांति मानव जीवन को शांति, शीतलता और आनंद प्रदान करती हैं।

बड़भागी हूं मैं कि दो युगों की अवतारी शक्तियां त्रेता के राम और द्वापर के कृष्ण की समन्वित शक्तियों के एक रूप में मैंने इस युग में अतवारी महापुरुष का दर्शन कर उनका सान्निध्य प्राप्त किया, वे हैं मेरे गुरुवर पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज। उनके अलौकिक आभामण्डल में जहां एक ओर मुझे भगवान राम की मर्यादा और धर्म दिखा वहीं दूसरी ओर भगवान कृष्ण का प्रेम और कर्म के भी दर्शन हुए। मैं धन्य हुआ अपने गुरु में भगवान राम और कृष्ण को पाकर।

सरल-सहज तपोनिष्ठ, आत्मनिष्ठ महापुरुष का ऐसा परोपकारी व कल्याणकारी स्वभाव मानव समाज को परोपकार की प्रेरणा भी देता है और उसे ध्यान साधना के माध्यम से आत्मनिष्ठ बनने में भी पूर्णरूपेण सहयोग करता है। भाग्यशाली हैं वे शिष्य और साधक जो महाराजश्री जैसे महान गुरु के सान्निध्य में सेवा करते हैं और ध्यान साधना करते हुए अपने मन और आत्मा को परमात्मा से जोड़ते हैं। इसके विपरित अभागे हैं वे लोग जो अपने समीप उपस्थित गुरुरूप में भगवान राम और कृष्ण के समन्वित रूप को नहीं पहचान पा रहे हैं।

अपने गुरु में राम और कृष्ण की कलाओं का क्रमशः वर्णन के साथ मैं अगले अंक में लिखूंगा।

आप भी प्रयास करें प्रतिदिन गुरु से जुड़े रहें चाहे टी.वी., सोशल मीडिया, सत्संगों या ध्यान शिविरों के माध्यम से।

आपके जीवन में भी गुरु से जुड़ने के पश्चात् निश्चित ही कुछ अप्रत्याशित, आश्चर्यजनक बदलाव आए होंगे, आपत्ति-विपत्ति से बाहर निकले होंगे, तो आप अवश्य हमसे अपने अनुभव साझा कीजिए ताकि आपसे प्रेरित होकर अन्य भक्तों की भी गुरु के प्रति श्रद्धा बढ़े और उन्हें भी आप के जैसा ही गुरु कृपा का लाभ प्राप्त हो सके। आप अपने अनुभव फोटो सहित श्री शिवाकांत द्विवेदी जी-सहसम्पादक धर्मदूत को उनके मोबाईल नम्बर-9968613351 पर अवश्य भेजें।

क्रमशः ...

आपका अपना
देवराज कटारीया

पुणे एवं मुम्बई (महाराष्ट्र) में सम्पन्न हुआ राष्ट्रव्यापी गुरुपूर्णिमा सत्संग

आत्म शुद्धिकरण एवं आध्यात्मिक प्रगति का पर्व है गुरुपूर्णिमा - सुधांशु जी महाराज

विश्व जागृति मिशन पुणे मण्डल द्वारा पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के सान्निध्य में 27 से 28 जून, 2025 को दो दिवसीय गुरुपूर्णिमा सत्संग पुणे स्थित थोपते बैंक्वेट सभागार में आयोजित किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में पहुंचकर भक्तजनों ने गुरुदर्शन, पूजन कर आशीर्वचन प्राप्त कर सत्संग श्रवण किया। इस अवसर पर भक्तों को आशीर्वाद देते हुए गुरुवर ने कहा-गुरुपूर्णिमा केवल पर्व नहीं, बल्कि आत्मा के शुद्धिकरण का अवसर है। आर्थिक प्रगति के लिए जैसे लेखा-जोखा आवश्यक है वैसे ही गुरुपूर्णिमा पर गुरु की शरण में जाना अनिवार्य है। सत्संग व्यक्ति के विचारों को शुद्ध करता है और जीवन को अनुशासित बनाता है। जिसका संग उत्तम होता है उसका जीने का ढंग भी उत्तम होता है। उन्होंने कहा भगवान ने हमें मार्ग दिए हैं, पर उन पर चलने की विवेकपूर्ण समझ गुरु से ही प्राप्त होती है।

पुणे मण्डल के प्रधान श्री घनश्याम झंवर जी के नेतृत्व में मण्डल के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का कार्यक्रम को सफल बनाने में सराहनीय योगदान रहा। ●

शिष्य के लिए रक्षा कवच है गुरुमंत्र

- सुधांशु जी महाराज

राष्ट्रव्यापी गुरुपूर्णिमा महोत्सव में विश्व जागृति मिशन थाणे (मुम्बई) मण्डल द्वारा पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सान्निध्य में 29 जून, 2025 को दिव्य भक्ति सत्संग आयोजित किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में भक्तों ने गुरुदर्शन पूजन किया। इस अवसर पर भक्तों को सम्बोधित करते हुए गुरुवर ने कहा- भारतीय संस्कृति में सद्गुरु को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। गुरु द्वारा दिया गया मंत्र शिष्य के लिए सदैव रक्षा कवच का कार्य करता है। शिष्य की अगाध श्रद्धा से गुरु के माध्यम से देव-पितृ कृपा भी प्राप्त होती है। उन्होंने कहा कि संचार क्रांति के इस युग में हमें न केवल आधुनिकता को अपनाना होगा बल्कि अपनी जड़ों से जुड़कर अपने बच्चों को संस्कृति और संस्कारों से जोड़ना होगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में मंडल के प्रधान श्री एस.एस. अग्रवाल एवं उनकी टीम का सराहनीय योगदान रहा। ●

सनातन संस्कृति जागरण महोत्सव में सहभागी कार्यकर्ताओं को आनन्दधाम में मिशन ने किया सम्मानित

कार्यकर्ताओं की श्रद्धा, लगन और सेवा से शिखर पर विश्व जागृति मिशन-सुधांशु जी महाराज

पीतमपुरा, दिल्ली

संगम विहार, दिल्ली

दक्षिणी दिल्ली

पूर्वी दिल्ली

जनकपुरी, दिल्ली

गाजियाबाद

गुरुग्राम, हरियाणा

फरीदाबाद, हरियाणा

पानीपत, हरियाणा

युवा क्रांति दल

आनंदधाम दिल्ली। पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के सान्निध्य में आनंदधाम दिल्ली एवं भारत मंडपम, प्रगति मैदान, दिल्ली में 2 से 4 मई, 2025 तक आयोजित 'सनातन संस्कृति जागरण महोत्सव' की अपार सफलता के उपलक्ष्य में 13 जून, 2025 को कार्यकर्ता सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में दिल्ली एन.सी.आर मंडल के सभी कार्यकर्त्ताओं, जिन्होंने 'सनातन संस्कृति जागरण महोत्सव' को सफल बनाने में बढ़चढ़ कर योगदान दिया उन्हें आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली में आमंत्रित कर पूज्य गुरुवर के आशीर्वाद के साथ प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया।

इस कार्यक्रम में कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए पूज्य गुरुवर ने कहा विश्व जागृति मिशन के सभी कार्यकर्त्तागण जो ईश्वरीय कार्य के लिए अपना समय और शक्ति लगाये हुए हैं आप सभी को बहुत-बहुत आशीर्वाद। आप सभी की श्रद्धा, लगन और सेवाकार्यों से यह मिशन शिखर छू रहा है। आप सभी हमारे मिशन की मणिमाला के मोती हैं। भगवान की दिव्य योजना के अनुसार ही कोई गुरुजन इस धरती पर आते हैं और यह व्यक्ति का सौभाग्य होता है कि वह अपने गुरु से जुड़कर अपने जीवन को दिव्य बनाता है। वह सिर्फ अपनी ही समस्याओं को नहीं सुलझाता अपितु औरों के जीवन में भी खुशियां लाता है। इस कार्यक्रम में आये हुए कार्यकर्त्ताओं को गुरु के प्रति श्रद्धा और मिशन के सेवाकार्यों के प्रति समर्पण भाव की सराहना करते हुए ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी ने सभी की प्रशंसा करते हुए शुभकामनाएं दी। सनातन संस्कृति जागरण महोत्सव को सफल बनाने में कार्यकर्त्ताओं के सेवा समर्पण भाव की मिशन के महामंत्री श्री देवराज कटारीया जी ने प्रशंसा की और तहेदिल से धन्यवाद किया। साथ ही केन्द्रीय कोषाध्यक्ष श्री एन.पी. चण्डोक जी ने भी मिशन के कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद किया। सहभोज के साथ कार्यक्रम का सफल समापन हुआ। ●

'धर्मो रक्षति रक्षितः' धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए धर्मादा से जुड़ें

धर्म शास्त्रों का संदेश है कि व्यक्ति जो भी कमाये उसमें से कुछ अंश धर्म के लिए दान कर अपने धन की शुद्धि करे। क्योंकि कहा गया है-'धर्मो रक्षति रक्षितः' जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। प्राचीन समय में हर व्यक्ति अपनी कमाई में से दसवां भाग ऐसे कार्यों में दान पुण्य करता था। इससे व्यक्ति की आय चाहे भले ही कम रही हो, लेकिन उसकी कमाई में बरकत बनी रहती थी। समय बदला और लोगों की आय भी बढ़ी लेकिन वे धीरे-धीरे दान-पुण्य करना भूलने लगे जिससे उनकी आय में बढ़ोत्तरी होने के बाद भी बरकत में कमी होने लगी। लोगों की आय भी बढ़े और बरकत भी बनी रहे इस उद्देश्य से पूज्य गुरुदेव जी महाराज ने विश्व जागृति मिशन द्वारा भक्तों के कल्याण के लिए धर्मादा सेवाएं प्रारम्भ करवाई हैं। मिशन अनाथाश्रम, गुरुकुल, योगा स्कूल, वृद्धाश्रम, धर्मार्थ अस्पताल, गौशालाएं, भण्डारे, आश्रम एवं मंदिर निर्माण, यज्ञ, सत्संग एवं साधना शिविर तथा दैवीय आपदाओं में सेवा-सहयोग भी करता है। आप इन सेवाकार्यों में दान-पुण्य कर अपने घर-परिवार में सुख-शांति और नौकरी-व्यापार में उन्नति-प्रगति का वरदान पायें।

इस जीवन का पैसा अगले जन्म में काम नहीं आता,
मगर इस जीवन का पुण्य जन्मों, जन्मों तक काम आता है।

संस्कृति का संवाहक गुरुकुल

करुणासिन्धु अस्पताल में नेत्र उपचार

बालाश्रम (अनाथाश्रम)

गौशाला में गौग्रास

आनन्दधाम का वृद्धाश्रम

यज्ञ-अग्निहोत्र

दैवीय आपदा सहयोग

आनन्दधाम में भण्डारा

यदि आप अभी तक धर्मादा सदस्य नहीं बने हैं और विश्व जागृति मिशन द्वारा चलाये जा रहे सेवा प्रकल्पों से संतुष्ट हैं तो श्री जी.सी. जोशी, दूरभाष-09311534556 पर सम्पर्क करें।

एक सुविधा यह भी

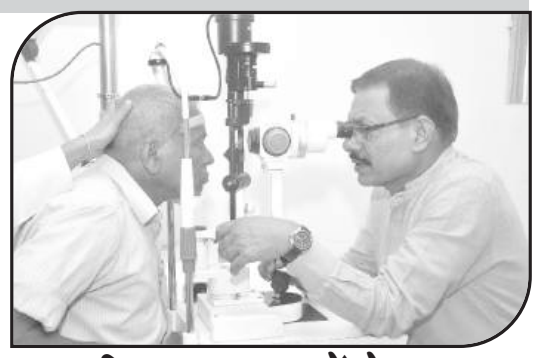

विश्व जागृति मिशन द्वारा संचालित विभिन्न सेवाप्रकल्पों के लिए दान आप पे.टी.एम. एवं अन्य यू.पी.आई. ऐप द्वारा भी कर सकते हैं।

Paytm UPI Accepted Here

भुगतान करने के पश्चात श्री जी.सी. जोशी जी के वाट्सऐप नं॰ 93115 34556 पर अवश्य सूचित करें।

आपके द्वारा दिया गया सहयोग आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।

भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

आनन्दधाम आश्रम के साथ मिशन के मंडलों में मनाया गया 11वां अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

योग जीवन दर्शन है - डॉ. अर्चिका दीदी

आनन्दधाम। सद्‌गुरुदेव जी की कृपा एवं डॉ. अर्चिका दीदी के सान्निध्य में आनन्दधाम आश्रम में 21 जून, 2025 को 11वां अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस बड़े अनुशासन व उत्साह से मनाया गया। इस आयोजन में मोरार जी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान का सहयोग मिला। साधकों को आयुष मंत्रालय द्वारा निर्धारित प्रोटोकोल के अनुकूल सभी योग क्रियाएं करवाई गई।

इस अवसर पर डॉ. अर्चिका दीदी ने अपने उद्‌बोधन में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस की बधाई देते हुए कहा योग भारत की प्राचीन विद्या है। हम ऋषियों-मुनियों के वंशज हैं। इस देश ने विश्व को योग का उपहार भेंट किया है। योग मन और शरीर पर नियंत्रण का साधन है। योग हमें अनुशासन से रहना सिखाता है। योग से मन को शांति मिलती है। जब साधक सामूहिक रूप से योग करते हैं, तो समाज में शांति का वातावरण बनता है। समाज में शांति से विश्व में शांति सुनिश्चित होती है। आज पूरा विश्व योग कर रहा है। वर्तमान में विश्व में व्याप्त अशांति को योग से ही समाप्त किया जा सकता है।

योग स्कूल के महामंत्री डॉ. नरेन्द्र मदान ने आश्रम में स्थापित योग स्कूल की उपलब्धियों व कार्यक्रमों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार आयुष मंत्रालय द्वारा विश्व जागृति मिशन इंटरनेशनल स्कूल को योग दिवस पर प्रमाण-पत्र दिया गया।

ज्ञात हो कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विश्व जागृति मिशन के पानीनत, पूर्वी दिल्ली, फरीदाबाद, करनाल, मुरादाबाद, मुंबई, नागपुर आदि अनेक मण्डलों में स्वास्थ्य जागरूकता के उद्देश्य से योगाभ्यास, ध्यान और प्राणायाम का अभ्यास कराया गया तथा योग को दिनचर्या का अंग बनाने के लिए प्रेरित किया गया। ●

पूर्वी दिल्ली

पानीपत

फरीदाबाद

गाजियाबाद में 18वां एवं जनकपुरी में 19वां बाल संस्कार केन्द्र का शुभारंभ

परम पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी जी के आशीर्वाद व प्रेरणा से 108 बाल संस्कार केंद्रों की स्थापना के क्रम में 22 जून 2025 को गाजियाबाद मंडल में 18वां एवं जनकपुरी में 29 जून, 2025 को 19वां बाल संस्कार केंद्र का शुभारंभ किया गया। इन दोनों केन्द्रों में छोटे बच्चों को सनातन धर्म, संस्कृति, संस्कार, सभ्यता और नैतिकता के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया जायेगा। दोनों स्थान के कार्यक्रमों में सैकड़ों बच्चों सहित उनके अभिभावक और क्षेत्र के गणमान्य जन उपस्थित रहे।

इस अवसर पर दोनों कार्यक्रमों में पूज्य गुरुदेव का ऑडियो संदेश भी सुनाया गया। जनकपुरी में जहां यह कार्यक्रम श्री दौलतराम कटारिया, डॉ. नरेन्द्र मदान जी के अध्यक्षता एवं मंडल के प्रधान श्री प्रवीण कटारिया जी के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। वहीं गाजियाबाद में श्री सुरेन्द्र मोहन शर्मा जी के नेतृत्व में कार्यक्रम को सफल बनाने में गाजियाबाद एवं पूर्वी दिल्ली मण्डल के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ परिवार जोड़ो अभियान केन्द्रीय समिति के अधिकारियों की सराहनीय भूमिका रही। ●

गाजियाबाद

जनकपुरी

कामधेनु गौशाला

गौ माता के संरक्षण और संवर्द्धन हेतु दान देकर पुण्य के भागीदार बनें।

कृपया गौशाला में दान देने के लिए आप अपनी सहयोग राशि ''विश्व जागृति मिशन-गौशाला'' के एक्सिस बैंक लिमिटेड, A-11, विशाल एनक्लेव, राजौरी गार्डन गार्डन, नई दिल्ली - 110027 के खाता संख्या -910010001264246, IFSC Code - UTIB0000066 में सीधे जमा करवा सकते हैं, इसकी सूचना आप श्री सतीश शर्मा-मो०-9310278078 पर अवश्य भेजें ताकि जमा राशि की रसीद बनाकर आपको प्रेषित कर सकें।

Paytm UPI Accepted Here

भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80-G के अंतर्गत कर मुक्त है।

अन्नदान महादान

कार्यालय : आनन्दधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041
दूरभाष : 9560792792, 9582954200
ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org
वेबसाइट : www.vishwajagritimission.org

अपने स्वयं व अपनों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व पूर्वजों की पुण्यस्मृति में अन्नपूर्णा योजना के अन्तर्गत यजमानों द्वारा आनन्दधाम आश्रम के गुरुकुल, वृद्धाश्रम में भोजन करवाया जाता है तथा गऊओं के लिए गौग्रास भी दिया जाता है। इस अवसर पर यजमानों के लिए मंगलकामना करते हुए आचार्यों एवं ऋषिकुमारों द्वारा प्रार्थना और यज्ञ भी किया जाता है।

इस योजना की सहयोग राशि आप सीधे बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं-

"VISHWA JAGRITI MISSION" का
A/c No. 916010029741912 Axis Bank,
East Punjabi Bagh, New Delhi-110026,
IFS CODE - UTIB0002497.

www.vishwajagritimission.org
आनंदधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041

राशि जमा कराने के उपरान्त उसकी सूचना हमें ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org व्हाट्सऐप नम्बर : 9582954200, 9560792792 पर अवश्य भेजें,ताकि जमा की गई राशि की रसीद आपको भेजी जा सके।

एक से अधिक तिथियाँ आरक्षित कराने के लिए उपरोक्त ई-मेल आई.डी. पर सूचित करें।
(आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है)

Admission Open
Session 2025 - 26

With the blessings of the most revered Sadgurudev Maharaj Ji and Yoga Guru Dr. Archika Didi Ji

Vishwa Jagriti Mission International Yog School

Affiliated to Central Sanskrit University, Janakpuri, New Delhi

Our Courses

1. B.Sc. in Yogic Science - 3 years
2. M.Sc. in Yogic Science - 2 years
3. PG Diploma in Yogic Science - 1 year
4. PG Diploma in Yoga, Naturopathy and Dietetics - 1 year
5. PG Diploma in Karmakanda - 1 year
6. PG Diploma in Computer Science and NLP - 1 year

Contact for details for admission in the above mentioned courses

Contact:-7827943295, 7827943297

Address - Ananddham Ashram, Bakkarwala Marg, Nangloi-Najafgarh Road, New Delhi-110041

दुःख-दारिद्रय निवारक और सुख-समृद्धि प्रदाता है - युगऋषि पूजा एवं अनुष्ठान केन्द्र

पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज की तपस्थली आनंदधाम का कण-कण दैवीय शक्तियों से ओतप्रोत है। यहां वेद की ऋचाएं गूंजती हैं, बाल-ब्रह्मचारी स्वाध्याय, संध्या-वंदन, नित्य यज्ञ और गीता, रामायण जैसे पवित्र ग्रंथों का पाठ करते हैं। गुरु महाराज के पावन सान्निध्य में प्रतिवर्ष 108 कुण्डीय श्री गणेश-लक्ष्मी महायज्ञ का बृहद आयोजन किया जाता है। अन्य विशेष पर्व-त्योहारों पर गुरुवर के सान्निध्य एवं साक्ष्य में पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान आयोजित किये जाते हैं। यजमान भक्तों की मनोकामनापूर्ति के लिये पूजा-अनुष्ठान किये जाते हैं। विद्वान ज्योतिषियों द्वारा जन्मपत्री देखकर उनका उचित समाधान के उपाय बताये जाते हैं। अब तक देश-विदेश के लाखों भक्तों ने आनंदधाम की तपोभूमि में देवी-देवताओं की कृपा और सद्गुरु आशीष से पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान करवाकर जीवन में आ रही विघ्न-बाधाओं से निजात पाकर सुख-शांति और धन-समृद्धि का वरदान प्राप्त किया है। आनंदधाम का युगऋषि पूजा एवं अनुष्ठान केन्द्र यजमान भक्तों के दुःख-दारिद्रय निवारण और सुख-समृद्धि देने के लिए अहर्निश समर्पित है। जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या का पूजा-पाठ, जप-यज्ञ, प्रार्थना से समाधान प्राप्त कर सुख-शांति और धन-समृद्धि से युक्त आनंदमय जीवन के लिए आपका स्वागत है।

अश्वमेध यज्ञ के समान फलदायी है एकादशी का व्रत

श्रावण कृष्ण एकादशी : 21 जुलाई, 2025
श्रावण शुक्ल एकादशी : 05 अगस्त, 2025

सभी व्रतों में एकादशी के व्रत को उत्तम माना जाता है और एकादशियों में कामिका एवं पवित्रा एकादशी के व्रत को विशेष महत्व दिया जाता है। कामिका एवं पवित्रा एकादशी के व्रत पूजन से भगवान विष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है। एकादशी का व्रत पूरे विधि-विधान और सच्चे हृदय से करने से भक्तों की मनोकामना पूर्ण होती है। व्रती साधक पवित्रात्मा होकर जन्म-जन्मांतर के पाप-संताप से मुक्ति का वरदान प्राप्त कर लेता है और उसका लोक-परलोक सुधर जाता है। एकादशी का व्रत सभी व्रतों में श्रेष्ठ और अश्वमेध यज्ञ करने के समान पुण्यफलदायी है। ●

अपनत्व और प्रेम के बंधन का पर्व है श्रावणी पूर्णिमा

रक्षाबंधन
09 अगस्त, 2025

श्रावणी पूर्णिमा 9 अगस्त, 2025 को रक्षाबंधन का पर्व है। भारतीय संस्कृति का यह एक ऐसा पर्व है जो भाई-बहन के पवित्र प्रेम के साथ सामाजिक संबंधों को भी मजबूती प्रदान करता है। रक्षाबंधन का पर्व विशेष रूप से भावनाओं और संवेदनाओं का पर्व है। यह ऐसा बंधन है जो प्रेम-स्नेह के बंधन से बांधता है। आज के परिप्रेक्ष्य में राखी केवल बहन-भाई तक सीमित नहीं है अपितु राखी का अर्थ है जो यह श्रद्धा व विश्वास का धागा बांधता है वह राखी बंधवाने वाले व्यक्ति के दायित्वों को भी स्वीकार करता है और इस रिश्ते को पूरी निष्ठा से निभाने का प्रयत्न भी करता है। रक्षाबंधन अपनत्व और प्यार के बंधन से रिश्तों को मजबूत करने का पर्व है, बंधन का यह तरीका हमारी संस्कृति को उत्कृष्टता प्रदान करता है। इस पर्व पर देवी-देवताओं के पूजन एवं धार्मिक अनुष्ठानों का विशेष महत्व है।

प्रदोष व्रत से आती है गृहस्थ जीवन में खुशहाली

भगवान शिव और माता पार्वती को प्रसन्न कर उनकी कृपा पाने के लिये हर महीने के दोनों पक्षों में आने वाले प्रदोष के व्रत, पूजन, जप, यज्ञ, दान का विशेष महत्व है। इससे भगवान शिव और माता पार्वती की विशेष कृपा प्राप्त होती है। प्रदोष के व्रत, पूजन, पाठ, जप, यज्ञ से भगवान शिव अपने भक्तों को मन की शांति और हर मनोकामना पूरी करते हैं। इस पुण्य पर्व का लाभ भक्तों को जरूर उठाना चाहिये। इस प्रदोष व्रत के दिन भगवान शिव के साथ उनके परिवार की पूजा की जाती है। इस पूजन के प्रभाव से घर-परिवार के कलह-क्लेश मिटते हैं और सुख-समृद्धि, प्रेम-प्रसन्नता का उदय होता है। इसलिये इस विशेष पर्व तिथि पर शिव परिवार की पूजा-आराधना शिवभक्तों को अवश्य करनी चाहिये। प्रदोष पर्व पर शिवचालीसा, शिव सहस्त्रनाम पाठ, रुद्राभिषेक, शिव पंचाक्षर मंत्र, महामृत्यंजय मंत्र जाप व पाठ स्वयं करने व सुयोग्य ब्राह्मणों से करवाने पर महापुण्य फल की प्राप्ति होती है। ●

प्रदोष व्रत (कृ.प.) 22 जुलाई, 2025
प्रदोष व्रत (शु.प.) 06 अगस्त, 2025

युगऋषि पूजा एवं अनुष्ठान केन्द्र द्वारा आयोजित आगामी पूजा अनुष्ठान जिनमें आप अपनी इच्छानुसार भाग ले सकते हैं

15 जुलाई, 2025	मंगलवार	नागपंचमी (मरुस्थले)
21 जुलाई, "	सोमवार	कामिका एकादशी एवं प्रथम श्रावण सोमवार
22 जुलाई, "	मंगलवार	भौम प्रदोष व्रत
23 जुलाई, "	बुधवार	मास शिवरात्रि
24 जुलाई, "	गुरुवार	हरियाली अमावस्या
27 जुलाई, "	रविवार	हरियाली तीज
28 जुलाई, "	सोमवार	विनायक चतुर्थी एवं द्वितीय श्रावण सोमवार
29 जुलाई, "	मंगलवार	नागपंचमी
04 अगस्त, "	सोमवार	तृतीय श्रावण सोमवार
05 अगस्त, "	मंगलवार	पवित्रा एकादशी
06 अगस्त, "	बुधवार	प्रदोष व्रत
09 अगस्त, "	शनिवार	श्रावणी पूर्णिमा एवं रक्षाबंधन
12 अगस्त, "	मंगलवार	कजली तृतीया एवं बहुला चतुर्थी
16 अगस्त, "	शनिवार	श्रीकृष्ट जन्माष्टमी

हरियाली अमावस्या पर करें देव-पितृ पूजन

श्रावण अमावस्या : 24 जुलाई, 2025

24 जुलाई, 2025 को श्रावण अमावस्या है। श्रावण मास की हरियाली अमावस्या पर स्नान-दान और देव-पितृ पूजन का विशेष महत्व है। मन को सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर बनाए रखने हेतु पवित्र नदियों में स्नान, तीर्थों की यात्रा, दान, सेवा-सहायता, यज्ञ, भजन, तप, साधु-सन्तों का संग, गुरु की शरण, धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय, माता-पिता का सम्मान, गरीबों पर दया एवं देव-पितरों का पूजन जैसे बहुत से साधन निर्देशित किए गए हैं। ज्योतिष के अनुसार पितृदोष, विषदोष, मंगली दोष, सन्तान हीनता, वैधव्य, दारिद्रय, धूर्त, कलह आदि भयंकर दोषों का कारण व्यक्ति के अपने अमर्यादित कर्म ही होते हैं, जिनसे मुक्ति प्राप्त करने के लिये धर्म का आचरण ही औषधि का कार्य करता है। धर्म का अनुसरण करने से पिछले दुष्कर्मों का प्रायश्चित होकर मन में पवित्रता का संचार होता है। ●

सभी पर्व-त्योहारों पर पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान के लिए "युगऋषि पूजा एवं अनुष्ठान केन्द्र" में सम्पर्क करें।
सम्पर्क सूत्र : +91 9560792792,8826891955,7291986653,9599695505

विश्व जागृति मिशन (रजि०) के लिए श्री देवराज कटारीया द्वारा समाचार पत्र "धर्मदूत" ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लॉक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015 से प्रकाशित एवं पुष्पक प्रिन्टर्स द्वारा मुद्रित। ग्रॉफिक डिजाइनिंग : सीता फाईन आर्ट्स प्रा० लि०, नई दिल्ली। सम्पादक : डॉ. नरेन्द्र मदान